उद्यमिता
Entrepreneurship

Subject Code- IVS-1A

Four Year Under Graduate Program (FYUGP)- Semester 1

Vinoba Bhave University, Hazaribag, Jharkhand

Questions of Group A are compulsory. Attempt any four from Group B.

ग्रुप ए के प्रश्न अनिवार्य हैं। ग्रुप बी से कोई चार प्रश्न कीजिए।

Group A

Q1 (a)अवसर एवं उद्यमी के बीच किस तरह का संबंध होता है? 1

(b) विपणन मिश्रण के मुख्य तत्व क्या हैं? 1

(c) बाजार व्यवहार्यता निर्धारण क्या है? 1

(d) व्यवसाय नियोजन क्या है? 1

(e) पट्टेदारी क्या होती है? 1

Q2. उद्यमी पूँजी की परिभाषा दें। 5

Q3. व्यवसाय नियोजन का अर्थ एवं अवधारणा पर टिप्पणी करे। 5

Group B

Q1. व्यावसायिक वातावरण के घटकों का विस्तार पूर्वक वर्णन करें। 15

Q2. उद्यमशीलता से आप क्या समझते हैं? इसकी मुख्य विशेषताएं क्या है? 15

Q3. "उद्यमिता एक देश के आर्थिक विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है|" इस कथन की व्याख्या करते हुए इसे न्यायोचित ठहराएँ। 15

Q4.एक नए व्यवसाय के जीवन काल के विभिन्न अवस्थाओं का वर्णन करें। 15

Q5. परियोजना साध्यता अध्ययन क्या है? परियोजना साध्यता विश्लेषण के विभिन्न तत्वों का वर्णन करें।15

Q6. अल्पकालीन तथा दीर्घकालीन वित्त के विभिन्न साधनों की संक्षेप में व्याख्या करें। 15

Q7. बौद्धिक संपदा अधिकार का विस्तृत परिचय दें। 15

Group A

Q1 (a) अवसर एवं उद्यमी के बीच किस तरह का संबंध होता है?(What is the relationship between opportunity and entrepreneur?)

उत्तर- अवसर तथा उद्यमी के बीच वही संबंध होता है जो प्राण और शरीर के बीच होता है। उद्यमी रूपी शरीर के लिए अवसर प्राण समान होता है। उद्यमी के दो रूप होते हैं- एक पहचानकर्ता का रूप, दूसरा प्रवर्तक का रूप|

(b) विपणन मिश्रण के मुख्य तत्व क्या हैं?(What are the main elements of marketing mix?)

उत्तर- विपणन मिश्रण के मुख्य तत्व हैं उत्पाद,मूल्य, संवर्धन एवं स्थान अथवा भौतिक वितरण।

(c) बाजार व्यवहार्यता निर्धारण क्या है? (What is market feasibility assessment?)

उत्तर- बाजार व्यवहरिया निर्धारण करते समय हम उत्पादों के लिए बाजार का निर्धारण करते हैं उत्पाद का चुनाव करने से पूर्व उसके बाजार का निर्धारण कर लेना चाहिए कि उक्त उत्पाद का बाजार स्थानीय होगा राष्ट्रीय या अंतरराष्ट्रीय यदि वह उत्पाद पहले से बाजार में उपलब्ध है देखना चाहिए नए उत्पाद का कारण क्या है और पुराने उत्पाद की तुलना में उसके नए उत्पाद के प्रति बाजार का क्या रुख रहेगा?

(d) व्यवसाय नियोजन क्या है?(What is business planning?)

उत्तर- व्यवसाय नियोजन एक लिखित विवरण होता है जिसमें यह स्पष्ट होता है कि उद्यमी क्या करने जा रहा है।उद्यमी क्या प्राप्त करना चाहता है तथा उसे कैसे प्राप्त करना चाहता है, आदि के संबंध में दिशा निर्देशन ही व्यवसाय नियोजन है।

(e) पट्टेदारी क्या होती है? (What is leasing?)

उत्तर- पट्टेदारी उस समझौते को कहते हैं कि जिसके अंतर्गत संपत्ति का स्वामी अपनी संपत्ति के प्रयोग का अधिकार किसी अन्य को निश्चित प्रतिफल के बदले दे देता है।

Q2. उद्यमी पूँजी की परिभाषा दें।(Define venture capital.)

उत्तर- उद्यमी पूँजी एक ताकत है जिसकी मदद से नवीकरण करने वाला उद्यमी, उद्यमी पूंजीपति से हाथ मिला कर संगठन स्थापित कर सकता है।दूसरे शब्दों में, उद्यमी पूंजीपति तथा उद्यमी हिस्सेदारों के रूप में कार्य कर सकते हैं जहां उद्यमी पूंजीपति न सिर्फ उद्यमी के साधारण अंश सीधे ही खरीद लेता है बल्कि उद्यमी के व्यापार के प्रबंध में भी हिस्सा लेता है जो उसे उसके निवेश को सुरक्षित रखने में सहायता करता है। उद्यमी पूँजी शब्द 2 शब्दों का सुमेल है -उद्यमी तथा पूँजी । उद्यमी का अर्थ है- कार्यों का एक क्रम जिसका नतीजा अनिश्चित होता है परंतु जिसके साथ हानि के खतरे का जोखिम होता है, पूँजी का अर्थ -संगठन को शुरू करने वाला संसाधन है ।उद्यमी पूंजी, अतः एक प्रक्रिया है जो सफल कंपनियों को बनाने के लिए वित्त देती है। विस्तृत रूप से, उद्यमी पूँजी का निवेशकों की बड़ी संख्या के रूप में वर्णन किया जा

सकता है । उद्यमी पूँजी एक सक्षम तंत्र है जिसके द्वारा नव निर्माण उद्यमिता को उद्यमी पूंजीपति द्वारा स्थापित किया जाता है एवं जिसके द्वारा पूंजी प्रदाता एवं उद्यमी सहभागी होते हैं। आई एम पांडे के अनुसार "उद्यमी पूँजी एक निवेश है जो कि साधारण,अर्ध साधारण तथा कई बार सीधे उधार या शर्तिया (जैसे ब्याज तथा मूल को चुकाना जब बिक्री शुरू हो जाए) रूप में होता है"।

Q3. व्यवसाय नियोजन का अर्थ एवं अवधारणा पर टिप्पणी करे।(Comment on the meaning and concept of business planning.)

उत्तर- व्यवसाय नियोजन एक लिखित प्रपत्र है जो उद्यमी के द्वारा तैयार किया जाता है। यह एक नए उपक्रम को आरंभ करने से संबंधित समस्त प्रासंगिक बाहरी एवं आंतरिक तत्वों का वर्णन करता है ।यह कार्यक्रम योजना, वित्त, मानव संसाधन एवं विनिर्माण को एकीकृत रूप में प्रस्तुत करता है। व्यवसाय नियोजन निम्न उद्देश्यों की पूर्ति हेतु किया जाता है

1.निर्देश प्रदान करना

2.चरण-दर -चरण प्रक्रिया की रूपरेखा तैयार करना

3.ऋण प्रदान करने वालों एवं निवेशकों को आकर्षित करना

4.उपक्रम के साथ जुड़े समस्त पहलुओं का विवरण तैयार करना

5.कार्यान्वियन के लिए दिशानिर्देश जारी करना इत्यादि।

Group B

Q1. व्यावसायिक वातावरण के घटकों का विस्तार पूर्वक वर्णन करें।(Describe in detail the components of business environment.)

उत्तर- बेयर्ड ओ व्हीलर के अनुसार व्यावसायिक वातावरण व्यावसायिक फॉर्म एवं उद्योगों के बाहर के इन सभी तत्वों का योग है जो उसके संगठन एवं संचालन को प्रभावित करते हैं। व्यवसाय की सफलता को प्रभावित करने वाले वातावरण संबंधी तत्वों को दो हिस्सों में विभाजित किया जा सकता है आंतरिक तथा बाहरी तत्व। इन तत्वों का वर्णन इस प्रकार से है।

आंतरिक वातावरण संबंधित तत्व

आंतरिक वातावरण उन सभी तत्वों को शामिल किया जाता है जो उद्यम/ संगठन के अंदर ही विद्यमान होते हैं तथा उद्यम की सफलता को प्रभावित करते हैं। आंतरिक वातावरण में 5 एम को शामिल किया जाता है जिनका अर्थ है: मनुष्य, सामग्री, धन, मशीनरी तथा प्रबंध।

आंतरिक वातावरण के ये तत्व सामान्यतया संस्था के नियंत्रण में होते हैं ।इसमें मानवीय संसाधन एक महत्वपूर्ण घटक है जो व्यवसाय की सफलता के लिए उत्तरदाई होता है। यदि किसी संस्था के कर्मचारी योग्य, कुशल एवं कार्य पद्धति के प्रति समर्पित हैं तो वे व्यवसाय को सफलता की नई ऊंचाइयों पर ले जा सकते हैं। नए व्यवसाय या स्थापित व्यवसाय की विपणन क्रियाएं, अनुसंधान व विकास क्रियाओं पर यदि उचित ध्यान दिया जाता है तो व्यवसाय प्रतिस्पर्धा का सामना कर सकता है तथा व्यवसाय की प्रगति को बनाए रखना संभव होता है।

बाहरी वातावरण संबंधी तत्व

बाहरी वातावरण से अर्थ उन सभी तत्वों से है जो व्यवसाय के बाहर तथा उसके आसपास विद्यमान होते हैं तथा उनका प्रभाव व्यवसाय की सफलता पर पड़ता है। सामान्यतया ऐसे तत्व उद्यमी के नियंत्रण से बाहर ही होते हैं। व्यवसाय की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि इन तत्वों के विषय में उद्यमी कितना जागृत है तथा अपने आसपास होने वाले परिवर्तनों के अनुसार वह है व्यवसाय को किस प्रकार समायोजित करता है।

बाहरी वातावरण दो प्रकार का होता है-

1. व्यष्टि /कार्यात्मक वातावरण

2. समष्टि/ सामान्य वातावरण

व्यष्टि /कार्यात्मक वातावरण के तत्व

इसमें उज्जैन के हुए सभी तत्व शामिल किए जाते हैं जो उसके तत्काल निर्माण नियंत्रण में होते हैं तथा व्यवसाय पर भी प्रभाव डालते हैं इनमें पूर्तिकर्ता, ग्राहक, बाजार मध्यस्थ: जिनमें पुनविक्रेता,भौतिक मध्यस्थ ,विपणन एजेंसियां, वित्तीय मध्यस्थ आदि शामिल होते हैं, प्रतियोगी इकाइयां तथा जनता आदि को शामिल किया जाता है। व्यापक रूप से जन समूह में वित्तीय जनसमूह, मीडिया जनसमूह, सरकारी जनसमूह, आंतरिक जनसमूह व स्थानीय जनसमूह को शामिल किया जाता है।

समष्टि/ सामान्य वातावरण के तत्व

समष्टि वातावरण से तात्पर्य व्यवसाय के सामान्य वातावरण से है। इसमें निम्न तत्वों को शामिल किया जाता है:

आर्थिक वातावरण: इससे तात्पर्य ग्राहकों की खरीदने की क्षमता और उसके खर्च करने की इच्छा से है, जिसके कारण प्रभावी मांग उत्पन्न होती है जो अपने आप में आर्थिक परिस्थितियों से प्रभावित होती हैं ।अतः आर्थिक दशाएं एक व्यवसाय की सफलता पर बहुत अधिक प्रभाव डालते हैं। आर्थिक वातावरण का अभिप्राय उन आर्थिक तत्वों से है, जिनका व्यवसाय के कार्य संचालन पर प्रभाव पड़ता है; जैसे आर्थिक व्यवस्था, आर्थिक नीति, अर्थव्यवस्था की प्रकृति, व्यापार चक्र, आय और धन का वितरण आदि।

राजनीतिक वातावरण: राजनीतिक वातावरण में मुख्यतः निम्नलिखित घटकों को शामिल किया जाता है। सरकार का राजनीतिक दृष्टिकोण, देश में राजनीतिक स्थिरता ,देश के अन्य राष्ट्रों के साथ संबंध ,सुरक्षा एवं कानून व्यवस्था, सरकार की कल्याणकारी योजनाएं, सरकार की औद्योगिक नीतियां, केंद्र और राज्य सरकारों के संबंध तथा विपक्षी दलों का व्यवसाय के प्रति दृष्टिकोण।

सामाजिक व सांस्कृतिक वातावरण: व्यवसाय समाज का एक अभिन्न अंग है तथा दोनों एक दूसरे को प्रभावित करते हैं।सामाजिक तथा सांस्कृतिक वातावरण का अभिप्राय : सामाजिक तथा सांस्कृतिक तत्वों के व्यवसाय की इकाई पर पड़ने वाले प्रभाव से है। इस वातावरण में मुख्य रूप से पारिवारिक व्यवस्था, शिक्षा, जाति प्रथा, विवाह, आदतें, प्राथमिकताएं ,भाषा ,शहरीकरण, रीति रिवाज एवं प्रथाएं तथा सामाजिक प्रवृत्ति आदि को शामिल किया जाता है।

तकनीकी वातावरण: विज्ञान के कारण तकनीकी परिवर्तन देखने को मिलता है जिससे नए-नए व्यवसायिक अवसर की उत्पत्ति होती है ।इसके अंतर्गत व्यवहारिक कार्य सुव्यवस्थित ढंग से किए जाते हैं। जो इकाइयां तकनीकी परिवर्तन के साथ अपने आप को नहीं ढाल पाती हैं, व्यवसाय में ज्यादा समय तक नहीं टिक सकेगी।

प्राकृतिक वातावरण: इसमें भौगोलिक तत्वों को शामिल किया जाता है जैसे प्राकृतिक संसाधन, मौसम और जलवायु संबंधी स्थितियां, तापमान, वर्षा की मात्रा, समुद्र से दूरी, पर्यावरण प्रदूषण आदि। इसके प्रत्येक या कुछ घटक मिलकर विभिन्न प्रकार के व्यवसाय के ऊपर अनुकूल या प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं।

जनांकिकीय वातावरण:इससे अभिप्राय जनसंख्या की विभिन्न विशेषताओं के अध्ययन से हैं, जैसे जनसंख्या का आकार, वृद्धि दर, आयु संरचना, आय स्तर, शिक्षा स्तर, परिवार आकार, परिवार संगठन आदि। व्यवसाय के उत्पाद की मांग, उत्पाद की उपलब्धता, उत्पादन की संरचना आदि पर इस वातावरण से गहरा प्रभाव पड़ता है।

अंतर्राष्ट्रीय वातावरण:यह विभिन्न प्रकार के व्यवसायों को प्रभावित करता है और खासकर ऐसे व्यवसाय को जो विदेशी व्यापार में सम्मिलित होते हैं।

Q2. उद्यमशीलता से आप क्या समझते हैं? इसकी मुख्य विशेषताएं क्या है?(What do you understand by entrepreneurship? What are its main features?)

उत्तर- उद्यमिता/ उद्यमशीलता एक व्यक्ति की संसाधनों के उपयोग को कम करने और उन्हें प्रक्रिया में लगाने और इसका अधिकतम लाभ प्राप्त करने की क्षमता है। उसे व्यवसाय की स्थिरता के लिए गुणवत्ता, उत्कृष्टता और उपभोक्ता जागरूकता को ध्यान में रखना चाहिए।इसलिए, उद्यमिता टीम वर्क और एक उद्यमी की एक टीम के रूप में निर्माण और काम करने की क्षमता का उत्पाद है।

उद्यमिता व्यवसाय शुरू करने और इसे सफल बनाने के लिए समय, धन और प्रयास का निवेश और जोखिम उठाना है।
-मुसलमैन और जैक्सन

उद्यमिता एक अभिनव कार्य है। यह एक स्वामित्व के बजाय एक नेतृत्व है। -शुम्पीटर

उद्यमिता एक व्यक्ति या संबंधित व्यक्तियों के समूह की उद्देश्यपूर्ण गतिविधियाँ हैं जो आर्थिक वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन या वितरण द्वारा लाभ को आरंभ करने, बनाए रखने और बढ़ाने के लिए की जाती हैं। -एच कोल

उद्यमिता एक यात्रा पर जाने वाला जहाज है जिसमें नवीन और रचनात्मक पुरुष और महिलाएं होते हैं, जो उन सभी रचनात्मक चीजों को करना पसंद करती हैं, जिन पर इससे पहले कोई हाथ नहीं उठा सकता। वे विचारों से भाग्य बनाते हैं। सफलता कभी भी उनके सिर नहीं चढ़ती और प्रत्येक सेट पीछे हट जाता है उत्कृष्टता के लिए लक्ष्य रखते हुए, उन्हें अपने भविष्य को तराशने के लिए पर्याप्त रूप से साहसी बनाता है। उद्यमिता है अपने सभी सहायक लाभों और जोखिमों के साथ वह करने की स्वतंत्रता जो कोई करना पसंद करता है। उद्यमिता परिणामों द्वारा परिभाषित है और विशेषताओं द्वारा नहीं है । यह एक जुनून है और सभी व्यावसायिक जोखिमों के बारे में है। सच्चा उद्यमी न केवल एक से पांच, बल्कि छह, सात, आठ और नौ इंद्रियों का उपयोग करता है। छह से नौ वास्तव में अस्तित्व में नहीं है, लेकिन वह उन्हें अपने जोखिम, अनुभव, असफलताओं के माध्यम से विकसित करता है और सुनने से समझने की अवधारणा का पालन करना।

उद्यमशीलता सदियों से विकसित हुई है और इसे विश्व अर्थव्यवस्था में प्रचलित स्थितियों के अनुसार अलग तरह से देखा गया है। नए जमाने के बिजनेस वेंचर्स हैं अधिक विचार-केंद्रित और न केवल उत्पाद-आधारित। व्यापार में सफलता की कुंजी सिर्फ विरासत नहीं है; यह अधिक धन का सृजन है और निरंतर नवीनता से प्रचलित है । तदनुसार, छोटे और मध्यम आकार के व्यवसायों की एक विस्तृत श्रृंखला उभरी है और अधिक खर्च करने के दृढ़ संकल्प के साथ-साथ संपन्न मध्यम वर्ग के साथ लोकप्रियता हासिल की, खर्च किए गए प्रत्येक रुपये से मूल्य प्राप्त करें।

उद्यमिता की विशेषताएं संक्षेप में इस प्रकार हैं:

1) यह नवाचार का एक कार्य है।

2) यह नेतृत्व का कार्य है।

3) यह एक संगठन निर्माण कार्य है।

4) यह उच्च उपलब्धि का कार्य है।

5) इसमें एक उद्यम का निर्माण और संचालन शामिल है।

6) यह संसाधनों के अनूठे संयोजनों से संबंधित है जो मौजूदा तरीकों या उत्पाद अप्रचलित बनाते हैं ।

7) यह उत्पादन के कारकों को नियोजित करने, प्रबंधित करने और विकसित करने से संबंधित है।

8) यह अप्रयुक्त अवसरों का दोहन करके ग्राहकों के लिए मूल्य सृजित करने की एक प्रक्रिया है।

9) यह बिक्री, आय, संपत्ति और में वृद्धि की दिशा में एक मजबूत और सकारात्मक रोज़गार अभिविन्यास है।

साथ-ही-साथ नवाचार उद्यमिता के अंतर्निहित आयामों में से एक है। उद्यमशीलता की प्रक्रिया में एक प्रमुख कार्य है। नवाचार के बिना, एक उद्यमी आधुनिक प्रतिस्पर्धी व्यापार दुनिया में जीवित नहीं रह सकता। उद्यमिता एक रचनात्मक और अभिनव प्रतिक्रिया है-पर्यावरण और आर्थिक अवसर को पहचानने, आरंभ करने और उसका फायदा उठाने की क्षमता। एक उद्यमी एक नवप्रवर्तक है जो परिचय देता है जो किसी अर्थव्यवस्था में कुछ नया पेश करता है। शुम्पीटर के विचार के अनुसार, एक व्यक्ति तभी उद्यमी बनता है जब वह नवाचार में लगा/ लगी हुई है। इसके अलावा, नवाचार प्रतिस्पर्धात्मक लाभ के बराबर है।उद्यमी आज नवाचार की आवश्यकता को महसूस करते हैं। नवाचार उत्पाद में मूल्य जोड़ता है। बस यही नवाचार के माध्यम से, संगठन बाजार में बढ़ती प्रतिस्पर्धा से बचे रह सकते हैं।

Q3. “उद्यमिता एक देश के आर्थिक विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है|” इस कथन की व्याख्या करते हुए इसे न्यायोचित ठहराएँ। (“Entrepreneurship plays an important role in the economic development of a country.” Explain this statement and justify it.)

उत्तर- आर्थिक विकास का तात्पर्य उस स्थिति से हैं जिसके अंतर्गत एक देश की प्रति व्यक्ति आय में समय के साथ साथ वृद्धि होती जाती है उद्यमिता की आर्थिक विकास में भूमिका का वर्णन करने से पहले यह आवश्यक हो जाता है कि आर्थिक विकास की अवधारणा का अर्थ समझा जाए। डब्लू करेवेश के अनुसार "आर्थिक विकास का अर्थ एक अर्थव्यवस्था के अंदर होने वाले आर्थिक विकास से है इसका मुख्य केंद्र देश की ऊंची तथा बढ़ती हुई प्रति व्यक्ति आय होता है। इस प्रकार आर्थिक विकास केवल एक घटना मात्र नहीं है बल्कि इसके लिए दृष्टि कड़ी मेहनत और अच्छी रणनीति की आवश्यकता होती है |यह एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है| यह एक उद्यमी ही होता है जो देश में अनुकूल परिस्थितियों को खोजता है, लोगों की आवश्यकताओं को समझता है तथा उसके अनुसार संसाधनों को इकट्ठा करता है ताकि वह उद्यम की स्थापना करके उन आवश्यकताओं को पूरा कर सकें| इसमें उद्यमिता ही है जो उद्यमी को उद्यम करने के लिए प्रेरित करती है इस संदर्भ में शुंपीटर ने कहा है कि आर्थिक विकास में विभिन्न ने उत्पादन के संसाधनों को नए तरीके से संयोजित किया जाता है तथा नए उत्पादन के साधनों की भी खोज की जाती है| उद्यमिता द्वारा नए विचार उत्पन्न होते हैं जिन्हें आर्थिक विकास के लिए लागू किया जाता है |उद्यमी आर्थिक विकास के लिए एक ट्रिगर दबाने का कार्य करता है तथा आर्थिक विकास की चिंगारी पैदा करता है| बदलते वातावरण उद्यमियों को नए नए अवसर प्रदान करते हैं जिसके परिणामस्वरूप उद्यमिता द्वारा देश में आर्थिक विकास के लिए एक सकारात्मक वातावरण तैयार करने का प्रयास किया जाता है| किसी भी देश में आर्थिक विकास के लिए उद्यमिता राज्य की मुख्य आवश्यकता होती है। पूंजीवादी और विकसित देशों में, निजी उद्यमी आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं| समाजवादी देशों में, राज्य (सरकार) उद्यमी है। अल्प विकसित देशों में, जोखिम की मात्रा के कारण निजी उद्यमशीलता को प्रोत्साहित नहीं किया जाता है। सरकार को आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है। लेकिन एक विकासशील देश में जैसे भारत, जो एक मिश्रित अर्थव्यवस्था का पालन करता है, सरकार और निजी उद्यमी दोनों की भूमिका उतना

ही महत्वपूर्ण है। 1991 के बाद से भारत सरकार द्वारा अपनाई गई उदार आर्थिक नीतियों के कारण निजी उद्यमियों की भूमिका और बढ़ गई है । आर्थिक विकास, आर्थिक क्षेत्र में नवाचार की दर पर निर्भर करता है, जो बदले में, समाज में उद्यमियों की संख्या और गुणवत्ता पर निर्भर करता है। इस प्रकार उद्यमी, समाज में प्रगति का एक एजेंट है। आजादी के पहले चार दशक के दौरान हमारी भारतीय अर्थव्यवस्था की धीमी प्रगति का कारण यही है कि भारतीय उद्यमी शर्मीला रहा है। लेकिन जिस प्रकार हमारी अर्थव्यवस्था प्रगति कर रही है, हमने उद्यमियों की संख्या में वृद्धि देखी है|

उद्यमिता के कुछ सामाजिक एवं आर्थिक लाभ निम्नलिखित हैं-

राष्ट्र की जीवन रेखा:

उद्यमिता के विकास के बिना कोई भी देश प्रगति नहीं कर सकता है। हर देश कोशिश कर रहा है

अपने व्यापार को बढ़ावा देना ताकि वह विकास के लाभों को साझा करने में सक्षम हो सके। इसलिए, उद्यमिता किसी देश के विकास के स्तर को मापने का पैमाना है।

नवीनता प्रदान करता है:

उद्यमिता उद्यम को नए विचार, कल्पना और दृष्टि प्रदान करती है। एक उद्यमी एक प्रर्वतक है क्योंकि वह नई तकनीक, उत्पादों और बाजारों को खोजने की कोशिश करता है। वह विभिन्न संसाधनों की उत्पादकता बढ़ाता है। आर्थिक विकास की पूरी प्रक्रिया के केंद्र में उद्यमी खड़ा है । वह व्यावसायिक विचारों की कल्पना करता है और उन्हें लागू करता है, आर्थिक विकास की प्रक्रिया को बढ़ाने के लिए।

विकास / समावेशी विकास में परिवर्तन:

एक उद्यम बदलते परिवेश में काम करता है। उद्यमी उद्यम को ऐसा बदलते परिवेश में ढालता है । उद्यमी न केवल उद्यम को ढालता है, बल्कि पर्यावरण ही बदल देता है , उद्यम की सफलता सुनिश्चित करने के लिए। स्वचालन और उन्नत प्रौद्योगिकी की जटिलताओं की चुनौती को पूरा करने के लिए उद्यमिता के विकास की आवश्यकता है।

बढ़ा हुआ मुनाफा:

किसी भी उद्यम में मुनाफा बढ़ाया जा सकता है, या तो बिक्री राजस्व बढ़ाकर या लागत कम करके। सेवा बिक्री द्वारा राजस्व में वृद्धि, एक उद्यम के नियंत्रण से बाहर है। उद्यमिता, लागत कम करके, इसके मुनाफे को बढ़ाता है और भविष्य के विकास और विकास के अवसर प्रदान करता है।

रोजगार के अवसर:

उद्यमिता और इसकी गतिविधियाँ अधिकतम रोजगार क्षमता प्रदान करती हैं। विशाल देश में उद्यमशीलता की गतिविधियों में बड़ी संख्या में लोग कार्यरत हैं। ये गतिविधियाँ अधिक से अधिक रोजगार के अवसर में वृद्धि लाती हैं।

सामाजिक लाभ:

यह न केवल व्यावसायिक उद्यम के लिए बल्कि बड़े पैमाने पर समाज के लिए फायदेमंद है। यह जीवन स्तर उठाता है न्यूनतम संभव लागत पर अच्छी गुणवत्ता वाले उत्पाद और सेवाएं प्रदान करके । यह दुर्लभ संसाधनों का इष्टतम उपयोग भी करता है और समाज में शांति और समृद्धि को बढ़ावा देता है ।

इस प्रकार उद्यमिता का हमारे देश के आर्थिक विकास में वृद्धि करने में एक महत्वपूर्ण स्थान है

Q4.एक नए व्यवसाय के जीवन काल के विभिन्न अवस्थाओं का वर्णन करें।(Describe the various stages in the life cycle of a new business.)

उत्तर- एक व्यवसाय को अपने संपूर्ण जीवन में अनेक अवस्थाओं से गुजरना पड़ता है |प्रत्येक अवस्था की अपनी विशेषताएं, लाभ, सीमाएं एवं चुनौतियां होती हैं |प्रत्येक अवस्था का अपना एक जीवनकाल भी होता है| प्रत्येक अवस्था का जीवनकाल प्रत्येक व्यवसाय के अनुसार अलग-अलग होता है| प्रत्येक व्यवसाय या नए व्यवसाय के जीवन चक्र पर विभिन्न तत्वों का प्रभाव पड़ता है जैसे व्यवसाय की प्रकृति, आकार, स्थान, प्रतिस्पर्धा का स्तर, सरकारी नीतियां, व्यवसायी वातावरण इत्यादि| जीवन काल की अवधारणा रुचिकर, परंतु उलझाने वाली एवं चुनौतियां देने वाली अवधारणा है| इसको समझने के लिए इसका गहन अध्ययन किए जाने की आवश्यकता होती है| एक नए व्यवसाय के जीवन काल की विभिन्न अवस्थाओं को इस प्रकार वर्णन किया जा सकता है-

बीज की अवस्था

वह एक व्यवसाय की प्रारंभिक काल की पहली अवस्था होती है| इसे व्यवसाय का जन्म भी कहा जाता है| इसे प्रारंभिक अवस्था भी कह सकते हैं| इसकी शुरुआत व्यवसाय या उद्यमी द्वारा व्यवसाय के विचार की कल्पना किए जाने से शुरू होती है| अर्थात जब एक उद्यमी एक विचार की कल्पना करता है| उसके संबंध में अनुसंधान करता है| अपने दोस्तों, रिश्तेदारों तथा व्यवसाय के क्षेत्र के पेशेवर लोगों से इसके बारे में और जानकारियां इकट्ठी करता है| यह सभी इसी अवस्था का हिस्सा होते हैं|

शुरुआती अवस्था

यह एक अन्य महत्वपूर्ण अवस्था है| इस स्तर पर उद्यमी का विचार वास्तविकता का रूप ले लेता है तथा व्यवसाय जन्म ले लेता है| इस अवस्था में उद्यमी का व्यवसाय एक वैधानिक स्थिति ले लेता है| व्यवसायी अपना कार्य शुरू कर देता है |उद्यमी, समाज की आवश्यकताओं के अनुसार उत्पादन करता है या सेवाएं

प्रदान करता है| इस स्तर पर उत्पादन की मात्रा को एक मध्यमा स्तर तक ही रखा जाता है| उत्पाद की मांग तथा बाजार की प्रतिक्रिया के अनुसार व्यवसाय की संभावित क्रियाएं की जाती हैं|

विकास अवस्था

इस अवस्था में उद्यमी को अपने प्रयासों का लाभ उत्पाद की बिक्री के रूप में प्राप्त होना शुरू हो जाता है| व्यवसाय निरंतर उसे लाभ दे रहा होता है तथा उसके ग्राहकों का आधार भी तैयार हो चुका होता है| इस प्रकार यह लाभ की अवस्था होती है| इसकी राशि से वह अपने व्यवसाय संचालन के सभी खर्चों को पूरा करता है |वह वर्तमान व्यवसाय से संबंधित क्षेत्रों में उपलब्ध अवसरों की तलाश करता है तथा नई शाखाएं खोलने का भी निर्णय लेता है|

स्थापित अवस्था

यह ऐसी अवस्था है जिसमें व्यवसाय समय के साथ-साथ परिपक्वता प्राप्त करते हुए एक स्थापित उद्यम का रूप ले लेता है| इसे एक स्थापित ईकाई के रूप में जाना जाता है| इस अवस्था में व्यवसाय के पास अपने संतुष्ट ग्राहकों की एक बड़ी संख्या होती है तथा उसका बाजार की बिक्री में एक अच्छा हिस्सा भी होता है|

विस्तार या तेज विकास की अवस्था

प्रत्येक उद्यमी इस अवस्था का सपना देखता है| यह वह अवस्था होती है जब उद्यमी का व्यवसाय एक पूर्ण रूप से स्थापित व्यवसाय की इकाई का रूप ले लेता है तथा औद्योगिक जगत में अपनी एक अलग पहचान बना लेता है | व्यवसाय अपनी जड़ें स्थापित करने के पश्चात नए-नए बाजार तथा नए नए क्षेत्रों में भी विस्तार का कार्य करता है| इस अवस्था में व्यवसाय अपनी सफल बिक्री प्रयासों की योजनाओं विपणन नीतियों संचालन नीतियों विक्रम रणनीतियों आदि के कारण अधिकतम लाभ तथा बिक्री के रूप में प्रतिफल प्राप्त करता है|

परिपक्वता स्थिति

यह व्यवसाय की ऐसी स्थिति है जिसमें व्यवसाय, संबंधित उद्योग में उच्च स्तर पर स्थापित है तथा परिपक्व हो चुका है| व्यवसाय की बाजार में उपस्थिति प्रशंसनीय स्तर पर होती है| परंतु, उसमें भी समस्याएं समानांतर रूप से साथ साथ उत्पन्न होती हैं |इस पर व्यवसाय के विकास की दर पहले की तरह बहुत अधिक नहीं होती |यह दर विस्तार की स्थिति से थोड़ा कम ही होती है|

बाहर निकलने की अवस्था

यह व्यवसाय के लिए एक खतरनाक एवं आरक्षण व्यवस्था मानी जाती है| कोई भी उद्यमी अपने व्यवसाय को इस अवस्था में नहीं देखना चाहता है| इस स्तर पर व्यवसाय को हर क्षेत्र में नकारात्मकता ही देखनी पड़ती है| व्यवसाय की बिक्री लाभ बाजार हिस्सा आदि सब कम होना शुरू कर देते हैं तथा गिरावट की प्रवृत्ति दिखाई पड़ती है|

Q5. परियोजना साध्यता अध्ययन क्या है? परियोजना साध्यता विश्लेषण के विभिन्न तत्वों का वर्णन करें।(What is Project Feasibility Study? Describe the various elements of project feasibility analysis.)

उत्तर- रोचेस्टर विश्वविद्यालय में उद्यमिता केंद्र ने समझाया कि "एक व्यवहार्यता अध्ययन किसी समस्या को हल करने के लिए कई विकल्पों से जुड़ा हुआ, समस्याओं और अवसरों की पहचान करना, उद्देश्यों को निर्धारित करना, स्थितियों का वर्णन करना, सफल परिणामों को परिभाषित करना और लागत और लाभों की सीमा का आकलन करना हो सकता है।"

व्यवहार्यता अध्ययन में एकत्रित और प्रस्तुत की गई जानकारी से उद्यमियों को मदद मिलेगी:

- उन सभी चीजों की विस्तार से सूची बनाने में जिनकी उन्हें व्यवसाय चलाने के लिए आवश्यकता है;
- रसद और अन्य व्यवसाय से संबंधित समस्याओं और समाधानों की पहचान करने में;
- मार्केटिंग रणनीति विकसित करने में जो किसी बैंक या निवेशक को विश्वास दिलाने के लिए सहायक हो कि उनका व्यवसाय मूल्यवान है तथा एक निवेश के रूप में विचार कराने में; और
- उनकी व्यावसायिक योजनाओं को विकसित करने के लिए एक ठोस आधार के रूप में।

यहां तक कि अगर उद्यमियों के पास एक अच्छा व्यवसाय विचार है, तब भी उन्हें लागत प्रभावी तरीका खोजना होगा बाजार और उनके उत्पादों और सेवाओं को बेचने के लिए।

प्रकार

- बाजार व्यवहार्यता:

  इसमें उद्योग का विवरण शामिल है, वर्तमान बाजार, अनुमानित भविष्य की बाजार क्षमता, प्रतियोगिता, बिक्री अनुमान, संभावित खरीदार, आदि।

- तकनीकी व्यवहार्यता:

  किसी उत्पाद या सेवा (यानी, सामग्री, श्रम, परिवहन, जहाँ व्यवसाय स्थित होगा, प्रौद्योगिकी की आवश्यकता, आदि)।

- वित्तीय व्यवहार्यता:

  प्रोजेक्ट करती है कि स्टार्ट-अप पूंजी की कितनी आवश्यकता है, पूंजी के स्रोत, निवेश पर रिटर्न, आदि।

- संगठनात्मक व्यवहार्यता:

व्यवसाय की कानूनी और कॉर्पोरेट संरचना को परिभाषित करता है (संस्थापकों के बारे में पेशेवर पृष्ठभूमि की जानकारी और उनके कौशल भी शामिल हैं, व्यापार में योगदान कर सकते हैं।)

विशेषताएं

- व्यवहार्यता अध्ययन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें एक विचार का अध्ययन यह देखने के लिए किया जाता है कि क्या यह "व्यवहार्य" है या नहीं है, अगर है तो यह कैसे यह काम करेगा।
- एक व्यापक व्यवहार्यता अध्ययन एक व्यवसाय की संपूर्ण संरचना, आवश्यकताओं और संचालन को देखता है।
- एक सीमित या परियोजना व्यवहार्यता अध्ययन एक विशिष्ट कार्य, कार्यक्रम, विचार, या संकट को देखता है।
- फायदे और नुकसान पर विचार करते हुए व्यवहार्यता अध्ययन दोनों पक्षों को देखता है,और संभावित समस्याओं का निवारण करता है।
- एक व्यवहार्यता अध्ययन एक व्यवसाय योजना नहीं है, लेकिन एक व्यापार की योजना के विकास के लिए एक नींव के रूप में कार्य करता है।
- एक बाजार व्यवहार्यता अध्ययन एक विपणन योजना नहीं है, लेकिन बाजार और बाजार की क्षमता अध्ययन करता है, और एक विपणन योजना का समर्थन या विकास करने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।
- एक व्यवसाय योजना के अतिरिक्त, व्यवहार्यता अध्ययन प्रस्तुत करना, एक निवेशक या उधार देने वाली संस्था को इसकी आवश्यकता पूंजी के अनुरोध पर विचार करने से पहले हो सकती है ।

एक अच्छी रूपरेखा

- परिचय
- उत्पाद या सेवा
- प्रौद्योगिकी
- बाजार पर्यावरण
- प्रतियोगिता
- उद्योग
- बिजनेस मॉडल
- बाजार और बिक्री रणनीति
- उत्पादन संचालन आवश्यकताएँ
- प्रबंधन और कार्मिक आवश्यकताएँ
- विनियम और पर्यावरणीय मुद्दे
- गंभीर जोखिम कारक

- वित्तीय भविष्यवाणियों सहित: बैलेंस शीट, आय विवरण, कैश फ्लो स्टेटमेंट, ब्रेक इवन एनालिसिस और कैपिटल रिक्वायरमेंट्स
- निष्कर्ष

Q6. अल्पकालीन तथा दीर्घकालीन वित्त के विभिन्न साधनों की संक्षेप में व्याख्या करें।(Briefly explain the various sources of short term and long term finance.)

उत्तर-किसी उद्यम की परियोजना को प्रारंभ करने के लिए आवश्यकताओं में से वित्त अत्यंत महत्वपूर्ण होता है| वास्तव में वित्त ही उद्यमी को उत्पादन के अन्य तत्व जैसे- भूमि, श्रम, मशीनरी तथा कच्चे माल से मिलकर वस्तुओं का उत्पादन करने में सहायता करता है।

वित्त के साधनों की पूर्ति को भी दो भागों में बांटा जा सकते हैं-समता पूंजी तथा ऋण पूंजी। समता पूंजी से आशय अंश धारियों की पूंजी से है जिसमें समता अंश पूंजी, पूर्वाधिकार अंश पूंजी, आंतरिक उपचय आदि शामिल हैं। दूसरी तरफ ऋण पूंजी में दीर्घकालीन वित्त दायित्वों को शामिल किया जाता है जैसे सावधि ऋण, ऋण पत्र, बैंक ऋण, सार्वजनिक जमाए इत्यादि।

वित्त के साधन विभिन्न स्रोत जिनसे उद्यमी वित्त प्राप्त कर सकता है उसे निम्नलिखित भागों में बांटा जा सकते हैं

1.वित्त के दीर्घकालीन साधन

2.वित्त के अल्पकालीन साधन

दीर्घकालीन वित्त के साधन

दीर्घकालीन वित्त की आवश्यकता स्थाई संपत्तियों को खरीदने के लिए पड़ती है| इसलिए इनको स्थाई पूंजी के साधन भी कहते हैं दीर्घकालीन वित्तीय साधनों में मुख्य रूप से निम्नलिखित को सम्मिलित किया जाता है

समता अंश पूंजी

ऐसे अंश जो पूर्वाधिकार अंश नहीं होते समता अंश कहलाते हैं | दूसरे शब्दों में, समता अंश धारियों को लाभांश तथा समापन की दशा में पूंजी प्राप्त करने का अधिकार पूर्वाधिकार अंश धारियों के बाद मिलता है| ऐसे अंशों के धारक कंपनी के कानूनी रूप से मालिक होते हैं।

पूर्वाधिकार अंश पूंजी

पूर्वाधिकार अंश पूंजी को समता अंशों की तुलना में लाभांश भुगतान तथा समापन की दशा में पूंजी वापसी दोनों में ही पूर्वाधिकार प्राप्त होता है| ये अंश विभिन्न प्रकार के हो सकते हैं जैसे कि संचयी और असंचयी, शोधनीय और अशोधनीय, भागयुक्त और अभागयुक्त, तथा परिवर्तनीय और अपरिवर्तनीय|

आंतरिक उपचय

उद्यम के आंतरिक उपचुनाव में ह्रास कोष तथा संचित लाभ सम्मिलित होते हैं| ह्रास से अभिप्राय पूंजीगत व्ययों को उस अवधि में बांटने से हैं जिस अवधि में उद्यम को ऐसे व्ययों का लाभ प्राप्त होने की आशा है| संचित लाभ से आशय लाभों के उस भाग से है जो उद्यम में ही पुनर्विनियोग कर दिया जाता है| इसे लाभों का पुनर्विनियोजन भी कहा जाता है|

सावधि ऋण

उद्यम दीर्घकालीन ऋण को मुख्य रूप से सावधि ऋण से प्राप्त करते हैं| सावधि ऋण की वापसी 10 वर्षों के भीतर कर दी जाती है | वित्तीय संस्थाएं भारतीय मुद्रा सावधि ऋण तथा विदेशी मुद्रा सावधि ऋण दोनों प्रदान करती हैं|

ऋण पत्र

ऋण पत्र उन साधनों में से एक है जो कंपनी द्वारा दीर्घकालीन वित्त को एकत्र करने के लिए बड़ी मात्रा में प्रयोग किए जाते हैं| ऋणपत्र कंपनी द्वारा जारी किया गया ऐसा दस्तावेज है जो इसे धारकों को देय ऋण का प्रतीक है| इन ऋण पत्रों पर कंपनी द्वारा निश्चित दर पर ब्याज दिया जाता है| ऋण पत्र निर्गमित करने वाली कंपनी को ऋण पत्र ट्रष्टी की नियुक्ति करनी पड़ती है जो ऋण पत्र धारियों के हितों की रक्षा करता है तथा उनकी शिकायतों का निपटारा करता है|

विविध साधन

वित्त के उपरोक्त साधनों के अतिरिक्त और भी विभिन्न प्रकार के साधन हैं जिनसे दीर्घकालीन वित्त प्राप्त किया जा सकता है| इनमें निम्नलिखित शामिल हैं -

स्थगित उधार

कई बार स्थाई संपत्तियों की आपूर्ति करने वाले स्थगित उधार की सुविधा प्रदान करते हैं जिसके अंतर्गत स्थाई संपत्ति के लिए भुगतान कुछ समय बाद किए जाते हैं| उस राशि पर ब्याज की दर तथा भुगतान करने की अवधि आपूर्तिकर्ताओं की शर्तों के अनुसार अलग-अलग हो सकती हैं|

पट्टा वित्त

पट्टा एक ऐसा अनुबंध है जिसके अंतर्गत स्वामी अपनी संपत्ति को एक निश्चित प्रतिफल के बदले एक निश्चित अवधि तक संपत्ति के प्रयोग का अधिकार पट्टेदार को दे देता है| पट्टे की अवधि समाप्त होने पर संपत्ति, पट्टे पर देने वाले व्यक्ति को वापस कर दी जाती है जो उसका कानूनी रूप से मालिक होता है|

किराया क्रय

वित्तीय संस्थाएं अधिकतर अपने ग्राहकों को किराया क्रय की सुविधा प्रदान करती है| किराया क्रय पद्धति में संपत्ति का विक्रेता क्रेता को संपत्ति का स्वामित्व स्थानांतरित किए बिना संपत्ति का अधिकार हस्तांतरित

कर देता है| क्रेता निश्चित अवधि में किस्तों का भुगतान करता है| इन किस्तों की राशि में मूलधन के साथ-साथ ब्याज भी सम्मिलित होता है|

सार्वजनिक जमाएँ

जनता से जमा प्राप्त करना भारत का परंपरागत साधन है। कंपनी सार्वजनिक रूप में अधिकतम 3 वर्ष के लिए जमाए स्वीकार कर सकती हैं|

उद्यम पूंजी

उद्यम पूंजी उचित तकनीक अधिक जोखिम तथा अधिक लाभ वाली परियोजनाओं को वित्त प्रदान करने का साधन है|

निर्यात वित्त

ऐसे वित्त की सुविधा निर्यात के लिए जहाज पर लदाई से पूर्व तथा बाद की अवस्था में दी जा सकती है| निर्यात वित्त की सुविधा ऐसे भारतीय तथा विदेशी बैंकों द्वारा दी जाती है जो विदेशी विनिमय व्यापारी संघ के सदस्य होते हैं| भारतीय आयात निर्यात बैंक भी निर्यातकों को वित्त प्रदान करता है

सरकारी प्रोत्साहन

कुछ निर्धारित क्षेत्रों में परियोजनाओं की स्थापना व प्रोत्साहन के लिए सरकार द्वारा कई प्रकार के प्रोत्साहन तथा सहायता प्रदान की जाती है| इसमें शामिल हैं-

(i) **प्रारंभिक पूंजी** -परियोजनाओं की स्थापना के लिए सरकार की ओर से कम ब्याज दर पर पूंजी उपलब्ध कराई जाती है|

(ii) **पूंजी रियायत**- कुछ विशेष क्षेत्रों में उद्योग लगाने के लिए उद्यमियों को पूंजी में रियायत प्रदान की जाती है ताकि देश का संतुलित विकास हो सके|

अल्पकालीन वित्तीय साधन

दैनिक व्यवसायिक कार्यों के लिए भी वित्त आवश्यक होता है| दूसरे शब्दों में, उद्यम की कार्यशील पूंजी की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अल्पकालीन वित्त प्रदान प्राप्त किया जाता है|

कुछ अल्पकालीन साधनों का उल्लेख इस प्रकार हैं

- **बैंक साधन**
- **गैर-बैंक साधन**

बैंक साधन

अल्पकालीन वित्त प्रदान करने के लिए व्यापारिक बैंक सबसे महत्वपूर्ण साधन है| इनमें नगद साख, अधिविकर्ष, बिलों को भुनाना तथा साख पत्र शामिल हैं|

नगद साख

नगद साख एक ऐसी व्यवस्था है जिसके अंतर्गत ऋणी को एक निश्चित सीमा तक धन निकालने की सुविधा मिल जाती हैं| यह ऋणी की वित्तीय स्थिति तथा साख क्षमता या ऋणी द्वारा प्रदान की गई प्रतिभूति के आधार पर निर्धारित की जाती हैं

अधिविकर्ष

एक ऐसी अस्थाई व्यवस्था है जिसके अंतर्गत उन ग्राहकों को जिनका बैंक में चालू खाता है एक निश्चित सीमा तक जमा से अधिक धन निकालने की सुविधा प्रदान की जाती है| साधारणतया यह सुविधा बहुत ही अल्पकाल जैसे 1 सप्ताह या 15 दिन के लिए दी जाती हैं|

बिलों को भुनाना

यह बैंक द्वारा उधार देने की ऐसी विधि है जिसके अंतर्गत बैंक विल के धारक को इसकी देय तिथि से पहले कटौती करके राशि दे देता है| देय तिथि पर बैंक इस बिल को इसके स्वीकर्ता के सामने प्रस्तुत करता है तथा इसका भुगतान प्राप्त करता है|

साख पत्र

साख पत्र एक ऐसी व्यवस्था है जिसके अंतर्गत बैंक अपने ग्राहकों को आपूर्तिकर्ताओं से उधार प्राप्त करने में सहायता प्रदान करता है| जब बैंक अपने ग्राहकों को किसी विशेष खरीद के लिए साख पत्र जारी करता है तो बैंक ग्राहक द्वारा त्रुटि की दशा में स्वयं भुगतान करने का उत्तरदायित्व लेता है

गैर बैंक साधन

ऐसे वित्तीय साधनों में शामिल होते हैं व्यापार साख, व्यापारिक पत्र, ग्राहकों से अग्रिम भुगतान, अर्जित व्यय तथा वित्तीय संस्थाओं से अल्पकालीन ऋण|

Q7. बौद्धिक संपदा अधिकार का विस्तृत परिचय दें। (Give a detailed introduction to Intellectual Property Rights.)

उत्तर- पिछले दो दशकों में, बौद्धिक संपदा अधिकार एक कद तक बढ़ गए हैं जहां से यह वैश्विक अर्थव्यवस्था के विकास में एक प्रमुख भूमिका निभाते है।बौद्धिक संपदा हर जगह है, यानी, वह संगीत जिसे आप सुनते हैं, तकनीक जो आपके फोन को काम कराता है आदि पर। यह सभी में मौजूद है जो चीज़ें आप देख सकते हैं—वे सभी मानव रचनात्मकता और कौशल के उत्पाद हैं जैसे आविष्कार, किताबें, पेंटिंग, गीत, प्रतीक, नाम, चित्र, या व्यापार आदि में उपयोग किए जाने वाले डिजाइन। सभी रचनाओं का आविष्कार

एक से शुरू होता है 'विचार'। एक बार विचार वास्तविक उत्पाद हो जाता है, यानी, बौद्धिक संपदा, संरक्षण के लिए भारत सरकार के तहत एक संबंधित अधिकारी को आवेदन कर सकते हैं । ऐसे उत्पादों को प्रदान किए गए कानूनी अधिकार 'बौद्धिक संपदा अधिकार (आईपीआर)' कहा जाता है|। इस तरह बौद्धिक संपदा (आईपी) मानव मन के उत्पाद को संदर्भित करता है, इसलिए,अन्य प्रकार की संपत्तियों की तरह, IP के मालिक इसे अन्य लोगों को किराए पर दे सकते हैं, दे सकते हैं या बेच सकते हैं ।विशेष रूप से, बौद्धिक संपदा (आईपी) मानव मन की रचनाओं को संदर्भित करता है, जैसे आविष्कार, साहित्यिक और कलात्मक कार्य, प्रतीक, नाम, चित्र और व्यापार में इस्तेमाल किया डिजाइन ।

बौद्धिक संपदा को दो व्यापक श्रेणियां में बांटा गया है: 'औद्योगिक संपत्ति',जिसमें आविष्कार (पेटेंट),ट्रेडमार्क, औद्योगिक डिजाइन और भौगोलिक संकेत शामिल हैं, जबकि अन्य 'कॉपीराइट' है, जिसमें शामिल हैं साहित्यिक और कलात्मक कार्य, जैसे उपन्यास, कविता, नाटक, फिल्म, संगीत कार्य, कलात्मक कार्य जैसे चित्र, पेंटिंग, तस्वीरें और मूर्तियां और वास्तुशिल्प डिजाइन।

बौद्धिक संपदा और अन्य संपत्ति के बीच सबसे अधिक ध्यान देने योग्य अंतर यह बौद्धिक संपत्ति अमूर्त है यानी यह अपने आप से परिभाषित नहीं हो सकती या भौतिक पैरामीटर से पहचानी नहीं जा सकती| बौद्धिक संपदा की परिभाषा समावेशन के साथ लगातार नए रूपों में विकसित हो रही है। हाल ही के दिनों में, भौगोलिक एकीकृत सर्किट और अघोषित संकेत, पौधों की किस्में की सुरक्षा और अर्धचालकों के संरक्षण में लायी गयी जानकारी को बुद्धिजीवियों की छतरी संपत्ति में शामिल किया गया है । भारत में निम्न प्रकार के बौद्धिक संपदा अधिकार मान्यता प्राप्त हैं: कॉपीराइट, ट्रेडमार्क, भौगोलिक संकेत, पेटेंट, डिजाइन, पौधों की विविधता, सेमीकंडक्टर इंटीग्रेटेड सर्किट लेआउट डिज़ाइन। इसके अलावा,पारंपरिक ज्ञान भी आई.पी. के अंतर्गत आता है|

कुछ भारतीय औषधीय प्रणाली परंपरा के उदाहरण हैं आयुर्वेद, यूनानी, सिद्ध और योग। परंपरागत ज्ञान (टी.के.) का अर्थ है ज्ञान, प्रणालियों, नवाचारों और प्रथाओं से जो दुनिया भर के स्थानीय समुदाय में मौजूद है ।ऐसा ज्ञान वर्षों से विकसित किया गया है और संचित है और उपयोग किया गया और कई पीढ़ियों में पारित किया गया है । पारंपरिक नॉलेज डिजिटल लाइब्रेरी (TKDL) भारत सरकार द्वारा विकसित किया गया है, जो अनिवार्य रूप से एक डिजिटल पारंपरिक का ज्ञान भंडार है, ज्ञान जो हमारे अंदर प्राचीन सभ्यता से मौजूद है, विशेष रूप से औषधीय पौधों और योगों के बारे में जो भारतीय चिकित्सा पद्धतियों में उपयोग किया जाता है। ज्ञान का यह समृद्ध शरीर मदद करता है हमारे पारंपरिक ज्ञान के गलत पेटेंट को रोकता है । एक अन्य प्रकार का आईपी –'ट्रेड सीक्रेट्स' है। लोकप्रिय पेय, कोका कोला के बारे में तो हम सभी जानते है । लेकिन इस पेय का नुस्खा पूरे दुनिया में तीन लोगों को ही पता है? यह गुप्त सूचना है जिसे 'ट्रेड सीक्रेट' कहा जाता है। एक व्यापार रहस्य मूल रूप से कोई गोपनीय है जानकारी जो प्रतिस्पर्धा में एक बढ़त प्रदान करता है । भारत में व्यापार रहस्य भारतीय अनुबंध अधिनियम, 1872 के तहत संरक्षित हैं ।

आईपी के प्रकार

राष्ट्र में रचनात्मकता को बढ़ावा देने और आर्थिक विकास में योगदान देने के लिए आईपीआर अत्यंत आवश्यक हैं। ऐसे अधिकार रचनाकारों और अन्वेषकों को उनकी रचनाओं और आविष्कारों पर नियंत्रण रखने की अनुमति देते हैं। ये अधिकार कलाकारों, उद्यमियों और अन्वेषकों को नई तकनीक और रचनात्मक कार्यों के अनुसंधान, विकास और विपणन के लिए आवश्यक संसाधनों को आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

बदलती वैश्विक अर्थव्यवस्था मानव विकास में निरंतर प्रगति के लिए अभूतपूर्व चुनौतियां और अवसर पैदा कर रही है। दुनिया भर में आईपी की मार्केटिंग या बिक्री के लिए व्यावसायिक अवसर हैं। भौगोलिक सीमाएँ कोई बाधा नहीं प्रस्तुत करती हैं - उपभोक्ता लगभग सब कुछ के तत्काल पहुँच का आनंद लेते हैं। ऐसे रोमांचक समय में, यह महत्वपूर्ण है कि हम आईपीआर के महत्व के बारे में जागरूक हों और यह दैनिक जीवन को कैसे प्रभावित करता है। बौद्धिक संपदा की छत्रछाया में, तीन अलग-अलग पहलू सामने आते हैं, जो हैं:

(i) कानून: बौद्धिक संपदा अधिकार वे कानूनी अधिकार हैं जो दूसरों को संरक्षित विषय वस्तु का उपयोग करने से रोकने के लिए निर्माता/आईपी मालिक को प्रदान किए जाते हैं। यह ज्ञान का कानूनी पहरेदार है।

(ii) प्रौद्योगिकी: बौद्धिक संपदा की पूर्व-आवश्यकता यह है कि सृजन मौलिक होना चाहिए। रचनाकार को कुछ नया अस्तित्व में लाना है। प्रौद्योगिकी के संबंध में आईपीआर सूचना प्रौद्योगिकी, ऑटोमोबाइल, फार्मास्यूटिकल्स, जैव प्रौद्योगिकी आदि के विभिन्न पहलुओं को शामिल करता है।

(iii) व्यवसाय और अर्थशास्त्र: आईपीआर की मूल बातें उद्योग के विकास में मदद करती हैं और व्यवसायों की सफलता में। आईपीआर व्यवसायों के मालिकों को अधिकार प्रदान करते हैं।

आइए अब प्रत्येक आईपी को समझते हैं।

कॉपीराइट

कॉपीराइट "प्रतिलिपि नहीं" करने का अधिकार है। यह तब पेश किया जाता है जब रचनाकार या लेखक द्वारा एक मूल विचार व्यक्त किया जाता है। यह साहित्यिक, कलात्मक, संगीतमय, साउंड रिकॉर्डिंग और सिनेमैटोग्राफिक फिल्म के रचनाकारों को दिया गया अधिकार है। सामग्री का अनधिकृत उपयोग को प्रतिबंधित करने के लिए कॉपीराइट निर्माता का एक विशेष अधिकार है जिसमें विषय वस्तु की प्रतियों का पुनरुत्पादन और वितरण शामिल है। कॉपीराइट की अनूठी विशेषता यह है कि जैसे ही कार्य अस्तित्व में आता है, काम की सुरक्षा स्वतः उत्पन्न हो जाती है। सामग्री का पंजीकरण अनिवार्य नहीं है लेकिन उल्लंघन के मामले में विशेष अधिकारों का प्रयोग करने के लिए आवश्यक है।

ट्रेडमार्क

एक ट्रेडमार्क कोई भी शब्द, नाम, या प्रतीक (या उनका संयोजन) है जो हमें किसी व्यक्ति, कंपनी, संगठन आदि द्वारा बनाए गए सामानों की पहचान करने देता है। ट्रेडमार्क हमें एक कंपनी के सामान को दूसरे से अलग करने की सुविधा भी देता है। किसी एक ब्रांड या लोगो में, ट्रेडमार्क आपको किसी के बारे में बहुत कुछ बता सकते हैं- कंपनी की प्रतिष्ठा, सद्भावना, उत्पादों और सेवाओं के बारे में । एक ट्रेडमार्क अपने प्रतिस्पर्धियों से बाजार में समान उत्पाद में भेद करने में मदद करता है। एक प्रतियोगी बाजार में अपने उत्पाद को बेचने के लिए उसी या समान ट्रेडमार्क का उपयोग नहीं कर सकता है क्योंकि यह भ्रामक समानता की अवधारणा के अंतर्गत आता है जिसे ध्वन्यात्मक, संरचनात्मक या दृश्य समानता के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। ट्रेडमार्क को पारंपरिक और गैर-पारंपरिक ट्रेडमार्क के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है -

(i) पारंपरिक ट्रेडमार्क: शब्द, रंग संयोजन, लेबल, लोगो, पैकेजिंग, सामान का आकार आदि।

(ii) गैर-परंपरागत ट्रेडमार्क: इस श्रेणी के तहत उन चिह्नों पर विचार किया जाता है जो पहले विशिष्ट माने नहीं जाते थे लेकिन समय बीतने के साथ पहचान मिलने लगी - ध्वनि को चिह्न, गतिशील चिह्न आदि।

ट्रेडमार्क अधिनियम 1999 के तहत ट्रेडमार्क का पंजीकरण अनिवार्य नहीं है, लेकिन ट्रेडमार्क का पंजीकरण चिह्न पर विशेष अधिकार स्थापित करने में मदद करता है। निशान दर्ज करने के लिए आप जा सकते हैं- http://www.ipindia.nic.in जो भारतीय ट्रेडमार्क रजिस्ट्री की वेबसाइट है।

भौगोलिक संकेत

एक भौगोलिक संकेत (जीआई) मुख्य रूप से एक संकेत है जो एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र से उत्पन्न होने वाले कृषि, प्राकृतिक या निर्मित उत्पादों (हस्तशिल्प, औद्योगिक सामान और खाद्य सामग्री) की पहचान करता है, जहां दी गई गुणवत्ता, प्रतिष्ठा या अन्य विशेषता अनिवार्य रूप से होती है इसकी भौगोलिक उत्पत्ति के कारण। जीआई हमारी सामूहिक और बौद्धिक विरासत का हिस्सा हैं जिन्हें संरक्षित और बढ़ावा देने की आवश्यकता है। जीआई के रूप में संरक्षित और पंजीकृत वस्तुओं को कृषि उत्पादों, प्राकृतिक, हस्तशिल्प, निर्मित वस्तुओं और खाद्य सामग्री में वर्गीकृत किया गया है। नागा मिर्चा, मिजो मिर्च, शफी लांफी, मोइरांग फी और चखेसांग शाल, बस्तर ढोकरा, वारली पेंटिंग, दार्जिलिंग टी, कांगड़ा पेंटिंग, नागपुर ऑरेंज, बनारस ब्रोकेड और साड़ियां, और कश्मीर पश्मीना जीआई के कुछ उदाहरण हैं। पिछले कुछ दशकों में जीआई का महत्व तेजी से बढ़ा है। जीआई एक भौगोलिक क्षेत्र की सामूहिक सद्भावना का प्रतिनिधित्व करता है, जो सदियों से खुद को बनाया है। आज, उपभोक्ता उत्पादों की भौगोलिक उत्पत्ति पर अधिक से अधिक ध्यान दे रहे हैं और इसमें मौजूद विशिष्ट विशेषताओं पर अधिक ध्यान दे रहे हैं उत्पाद जो वे खरीदते हैं। कुछ मामलों में, "मूल स्थान" और "भौगोलिक संकेत" के बीच अंतर होता है जो

उपभोक्ताओं को सुझाव देता है, कि उत्पाद में एक विशेष गुणवत्ता या विशेषता होगी, जिसे वे महत्व दे सकते हैं।

पेटेंट

एक पेटेंट एक प्रकार का आईपीआर है जो सुरक्षा करता है वैज्ञानिक आविष्कार (उत्पाद और या प्रक्रिया) जो पहले से ज्ञात उत्पादों पर तकनीकी उन्नति दर्शाता है। एक 'पेटेंट' सरकार द्वारा दिया गया एक विशेष अधिकार है जो अन्य सभी को 'बहिष्कृत करने का विशेष अधिकार' प्रदान करता है और उन्हें आविष्कार को बनाने, उपयोग करने, बिक्री के लिए पेश करने, बेचने या आयात करने से रोकता है। एक आविष्कार के पेटेंट योग्य होने के लिए, यह किसी भी व्यक्ति के लिए नया, गैर-स्पष्ट होना चाहिए जो प्रौद्योगिकी के संबंधित क्षेत्र में कुशल हो और सक्षम होना चाहिए औद्योगिक अनुप्रयोग की। (i) यह नया होना चाहिए, यानी यह दुनिया में कहीं भी मौजूदा ज्ञान में पहले से मौजूद नहीं होना चाहिए, यानी पेटेंट आवेदन (नवीनता) दाखिल करने से पहले किसी भी रूप में सार्वजनिक डोमेन में नहीं होना चाहिए। (ii) प्रौद्योगिकी के प्रासंगिक क्षेत्र में कुशल किसी भी व्यक्ति के लिए यह स्पष्ट नहीं होना चाहिए। अर्थात्, मानक अध्ययन के ऐसे क्षेत्र (आविष्कारशील कदम) में यथोचित रूप से कुशल व्यक्ति है। (iii) अंत में, यह औद्योगिक अनुप्रयोग के लिए सक्षम होना चाहिए, अर्थात उपयोग या उद्योग निर्मित होने में सक्षम होना चाहिए| पेटेंट केवल एक आविष्कार पर अधिकार प्राप्त करने के लिए दायर किया जा सकता है न कि खोज के लिए।पेटेंट का उद्देश्य वैज्ञानिक क्षेत्र में नवाचार को प्रोत्साहित करना है। एक पेटेंट 20 साल की अवधि के लिए आविष्कारक को विशेष अधिकार प्रदान करता है, जिसके दौरान कोई भी अन्य व्यक्ति जो पेटेंट की गई विषय-वस्तु का उपयोग करना चाहता है, उसे इसके लिए कुछ लागतों का भुगतान करके पेटेंटधारी से अनुमति लेने की आवश्यकता होती है। इस तरह के एक आविष्कार का व्यावसायिक उपयोग। शुल्क के लिए पेटेंटधारी के अनन्य अधिकार प्राप्त करने की इस प्रक्रिया को लाइसेंसिंग कहा जाता है। पेटेंट एक अस्थायी एकाधिकार बनाता है। एक बार पेटेंट की अवधि अविष्कार सार्वजनिक डोमेन में है, जिसका अर्थ है कि यह लोगों द्वारा उपयोग के लिए निःशुल्क है। यह पेटेंटधारी को एकाधिकार आदि बनाने जैसी प्रतिस्पर्धा-रोधी प्रथाओं में शामिल होने से रोकता है।

डिज़ाइन

एक 'डिज़ाइन' में आकार, पैटर्न और रेखाओं की व्यवस्था या रंग संयोजन शामिल होता है जो किसी भी वस्तु पर लागू होता है। यह सौंदर्य उपस्थिति या आकर्षक सुविधाओं के लिए दी गई सुरक्षा है। एक डिजाइन की सुरक्षा की अवधि 10 वर्षों के लिए वैध होती है, जिसे इस अवधि की समाप्ति के बाद अगले 5 वर्षों के लिए नवीनीकृत किया जा सकता है, जिसके दौरान एक पंजीकृत डिजाइन का उपयोग केवल उसके मालिक से लाइसेंस प्राप्त करने और वैधता अवधि समाप्त होने के बाद डिजाइन सार्वजनिक डोमेन में किया जा सकता है।

पौधे की किस्म

पौधे की विविधता अनिवार्य रूप से पौधों को उनकी वानस्पतिक विशेषताओं के आधार पर श्रेणियों में बांट रही है। यह एक प्रकार की किस्म है जिसे किसानों द्वारा पाला और विकसित किया जाता है। यह पादप आनुवंशिक संसाधनों के संरक्षण, सुधार और उपलब्ध कराने में मदद करता है। उदाहरण के लिए, आलू के संकर संस्करण। ऐसी सुरक्षा अनुसंधान एवं विकास में निवेश को बढ़ावा देता है, भारतीय किसानों को कृषक, संरक्षक और प्रजनक के रूप में मान्यता देता है साथ ही उच्च गुणवत्ता वाले बीज और रोपण सामग्री की सुविधा प्रदान करता है। इससे बीज उद्योग का विकास होता है।

सेमीकंडक्टर एकीकृत सर्किट लेआउट डिजाइन

एक सेमीकंडक्टर हर कंप्यूटर चिप का एक अभिन्न अंग है। कोई भी उत्पाद जिसमें ट्रांजिस्टर और अन्य सर्किट्री तत्व होते हैं और अर्धचालक सामग्री पर इन्सुलेट सामग्री के रूप में उपयोग किए जाते हैं, या अर्धचालक सामग्री के अंदर। इसका डिजाइन एक इलेक्ट्रॉनिक सर्किटरी को परफॉर्म करना है|